नव निर्माण®

भाग - ४

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

NEW ERA'S SELF HELP

समर्पण

यह किताब समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षको को,
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्कि
अपने बच्चो की,
धरोहर मानकर
जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।
विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

अल्प परिचय....

विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का भी मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पूरा किया। उसके बाद उन्होने ॲडहेसिव्ह एवं सिलंन्टस् का व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे कुछ वर्ष बेचनेका व्यवसाय किया फिर बादमे वही चीजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल और दूरदर्षी उद्योजक है। उन्होने ॲडहेसिव्ह एवं सिलंन्टस् पदार्थो मे दो नये संशोधन किये। और अनेक उत्पादन खुद बनाये। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनके साहीत्य हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपूर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, कव्वाली, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, सिनेगीत, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक साहित्य का एक बड़ा संग्रह तैय्यार किया है। उनकी अबतक आठ किताबे प्रकाशित हो चुकी है और यह नववी किताब है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल उनको अपने साहित्ययात्रा मे बहुत ही महत्वपुर्ण साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और किताबोसे मिलनेवाली संपूर्ण राशी पर्यावरण सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

यह कार्य नही क्रांती है।

नव निर्माण®

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	१०००
चित्रांकन	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
अक्षरांकन	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
निर्मिती	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगाँव – ४२५ ००१ (महा.)
मुद्रक	:	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव

© New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Rights reserved 2015
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd.
Company Reg.No. : U 51909 MH 2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित –
पूर्वानुमती के बिना इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांती है।

प्रस्तावना ...

बढ़ती स्पर्धा के कारण स्कूलों में अभ्यास क्रम बढ़ रहा है। दूसरी तरफ जीवन की बढ़ती जरुरतों को पूरा करने माँ–बाप की व्यस्तता बढ़ रही है। इसी के कारण हम इच्छा और साधन होते हुए भी हमारे बच्चों को हमारी परंपरा, संस्कार, अच्छी आदतें जैसी अमूल्य चीजें नहीं दे पा रहे हैं। आज हम वह सब नहीं कर पाते जिससे की आने वाली पिढ़ी सुसंस्कृत और सुदृढ़ बने। जीवन की छोटी छोटी बातें जो अच्छा इन्सान बनने के लिए जरुरी है, वह बच्चो के सामने सरल शब्दों में रखना, यह इस किताब का प्रथम लक्ष्य है। हमारे बच्चे सिर्फ पैसे कमाने की मशीन नहीं बल्कि पैसों का सदुपयोग कर एक अच्छा समाज बनायें। जीवन का भरपूर मजा उठायें और सही मायने में सुखी और समाधानी हो। ऐसा पवित्र और उतना ही अनूठा ध्येय हमारा है। इसी के साथ बच्चों का जीवन के हर पहलू के तरफ देखने का नजरिया बदले। उन्हें एक सकारात्मक नजरिया मिले। इस बात का ध्यान हर कविता में रखा गया है।

हम जो लक्ष्य लेकर चल रहे है उसमे माता, पिता और गुरुजनों का सहकार्य, प्रेम और सुझाव अनिवार्य होगा। पच्चीस–पच्चीस कविताओं के चार खण्ड पहले वर्ग से लेकर तो नवमी कक्षा के बच्चों के लिए बनाये गऐ है। जीवन के कुल १०० महत्वपूर्ण विषयों पर कवितायें रची गई है। अपने बच्चों के हृदयमें इसमें से कुछ कवितायें भी हम उतार सके तो वे कभी असफल, निराश या बीमार नहीं होंगे ऐसा हमारा मानना है। और हम सुनहरे भविष्य में एक सुदृढ़ कड़ी जोड़कर हमारा सामाजिक दायित्व पूरा कर सकेगें। अन्त में इतना ही लिखूंगा की इस किताब से मिलनेवाली पूरी राशी समाज, पर्यावरण की सुरक्षा और पेड़ पौधे लगाने में ही खर्च होगी। जिससे हम आनेवाली पिढ़ी के लिए एक सुदृढ़ समाज, सुखद पर्यावरण एवं सुंदर धरती छोड़ सकेंगे।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांती है।

नव निर्माण®

भाग - ४

NEW ERA'S SELF HELP

सूची

अ.नं.	विषय	पृष्ठ क्र.
१)	खेल भावना	०१
२)	हारना नहीं	०२
३)	जियो और जीने दो	०३
४)	पानी का महत्व	०४
५)	करुणा	०५
६)	संगीत	०६
७)	स्तुति	०७
८)	सृष्टि का आदर	०८
९)	आशीर्वाद	०९
१०)	विचलित न हो	१०
११)	स्वस्थ मन	११
१२)	वर्तमान मे जियो	१२
१३)	पढ़ाई	१३
१४)	भविष्य बनाओ	१४
१५)	दोस्ती	१५
१६)	अच्छी आदतें	१६
१७)	भाषा	१७
१८)	जड़ता	१८
१९)	नसीब	१९
२०)	रोगो से बचो	२०
२१)	भूतकाल से सीखो	२१
२२)	मनोरंजन	२२
२३)	कर्मठता	२३
२४)	सकारात्मक सोच	२४
२५)	अपाहिजो के प्रति व्यवहार	२५

यह कार्य नही क्रांती है।

खेल भावना

जो बच्चे जीवन जीते
खेल भावना दिलमे रखकर ।
परिणाम चाहे कुछ भी हो
जीवन उनका बनता सुखकर ।।

जीत हरदम नही रहती
गर्व ना करो उसमे उलझकर ।
हार बढ़ाती धैर्य मनमे
नही चलेगा इससे ड़रकर ।।

हार जीत है खेल सृष्टिका
दिन जातेही रात आती उतरकर ।
कामयाबी तबही मिलेगी जब
खुश रहोगे दोनो को अपनाकर ।।

जीत बढ़ाती हौसला मनमे
मनकी ताकत बढ़ती हारकर ।
खेल भावना दिलमे भरलो
ना रहो इनसे दामन चुराकर ।।

जीत मिलती है बच्चो
पाने के बाद कई हार ।
हारोगे नही तो पाओगे कैसे
बताओ खेलपे पूर्ण अधिकार ।।

हारना नहीं

संकटो से तुम कभी
बच्चो नहीं हारना ।
मायूस होकर जीवनमे
रास्तेसे नहीं भटकना ।।

संकट आतेही तुम
उनको आजमाना ।
कितना आत्मबल है
तुममें यह उन्हे दिखाना ।।

नहीं तुम जीतके
इतने गुलाम बनना ।
हार के बादही जीत
यह ध्यान से सुनाना ।।

बुरी आदतें और निराशाओसे
इनसे हमे है जीतना ।
लालच, भ्रष्टाचार को
कभी नहीं बढ़ावा देना ।।

जीवन एक खेल है
इसे ठीक ढ़ंग से खेलना ।
जितने दिन ढ़ंग से जीओगे
बहुत होगा उतना जीना ।।

जियो और जीने दो

जियो और जीने दो
यह नारा हमको लुभाता ।
मारने वाला हारा देखो
बचाने वाला जीता ।।

छीना झपटीमे ना कटे जीवन
नही आयेगा पल जो बीता ।
दु:ख ना किसी को देना
हर धर्म ग्रंथ है कहता ।।

सृष्टि पे अधिकार सबका
कोई नही यहाँ पर अछूता ।
जो सबको आनंद देगा
वोही ऊपर वालेको भाता ।।

मारना आसान जीवन मे
जीवन देनेवाला दाता ।
जो औरो के दु:ख कम करे
वोही कहलाता है विधाता ।।

खुद भी आनंदमे रहकर
औरोको जो आनंद बाटता ।
वोही भरपूर जीवन जीता
उसेही ढ़ेर सारा प्यार मिलता ।।

पानी का महत्व

सृष्टि में सबसे महंगी
चीज है बच्चो पानी ।
संभालकर इस्तेमाल करो
छोड़ो अब मनमानी ।।

कहते ज्ञानी युद्ध होंगे
गर नही बचाया पानी ।
और अच्छा पानी पीनेसे
मीठी रहेगी वाणी ।।

पानी से देखो सुख समृद्धि
बनी रहती आबादानी ।
खेत खलियान लहराकर झूमते
मस्ती मे रहते सब प्राणी ।।

पानी पे सबकुछ निर्भर
पूछो उनसे जहाँ नही पानी ।
संभालो, इकट्ठा करो, बचाओ
तोही होगी दुनियाँ सुहानी ।।

देखो कितने किस्मत वाले हम
गिरता बरसात मे हर साल पानी ।
इसको हमने इकट्ठा नही किया
तो टाल नही सकते अनहोनी ।।

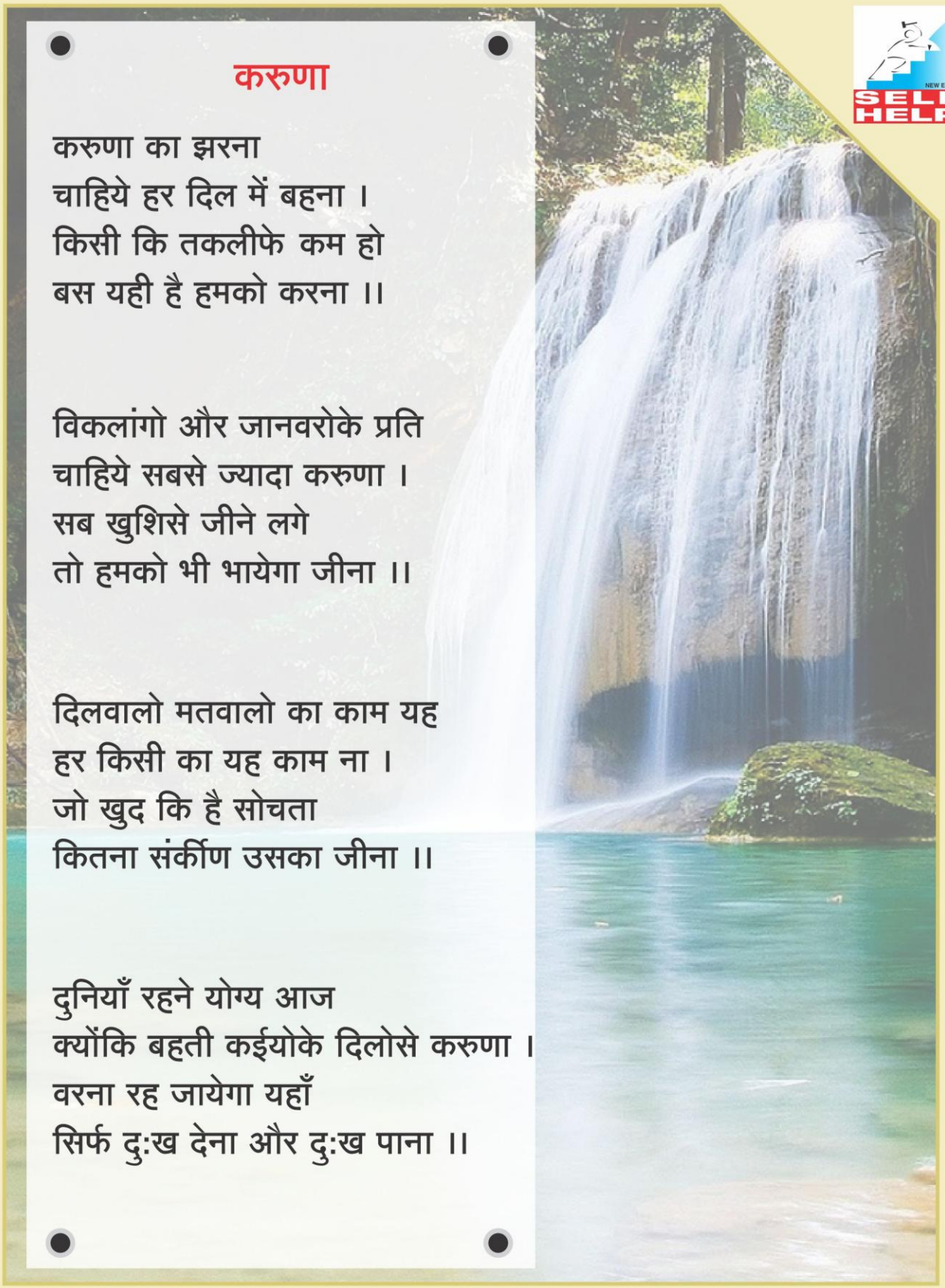

करुणा

करुणा का झरना
चाहिये हर दिल में बहना ।
किसी कि तकलीफे कम हो
बस यही है हमको करना ।।

विकलांगो और जानवरोके प्रति
चाहिये सबसे ज्यादा करुणा ।
सब खुशिसे जीने लगे
तो हमको भी भायेगा जीना ।।

दिलवालो मतवालो का काम यह
हर किसी का यह काम ना ।
जो खुद कि है सोचता
कितना संर्कीण उसका जीना ।।

दुनियाँ रहने योग्य आज
क्योंकि बहती कईयोके दिलोसे करुणा ।
वरना रह जायेगा यहाँ
सिर्फ दु:ख देना और दु:ख पाना ।।

संगीत

संगीत रिझाता तन मन को
रस घोलता जीवनमे ।
थकान निराशा दूर भगाता
अलौकिक चेतना जगाता दिलमे ।।

रोग भी अब दूर होने लगे
जादू है देखो संगीतमे ।
इसको रोज सुनने वाला
कुंठा, चिंता नही लाता जीवनमे ।।

बच्चो संगीत को गले लगाओ
करो हर कर्म ताल और लयमे ।
सृष्टि का बड़ा उपहार यह
बिताओ जीवन संगीत के संगमे ।।

है संगीत पक्षीयो के चहचहाटमे
नदीयाँ, झरणे गा रहे सुरमे ।
देखो जीवन का सुर ना बिगड़े
बीते जीवन सिर्फ स्वाभाविकतामे ।।

संगीत भाता पेड़ पौधोको भी
नई ऊर्जा लाता उनमे ।
बनो साधक तुम इसके
उतारो उसको अपने जीवनमे ।।

स्तुति

स्तुति बिगाड़ती बिगड़ोको
नियंत्रित करो जजबात ।
सबसे अच्छा बनाती अच्छोको
सीखो यह तुम बात ।।

स्तुति करना और पाना
देखो ये अच्छी बात ।
स्तुति लेकर आती जीवनमे
भरपूर खुशियोंकी सौगात ।।

स्तुति बन जाती प्रेरणा
चाहे आये कष्ट बहुत ।
बुरे आदमियों के मनमे
बढ़ाती बुरे कामोकी चाहत ।।

स्तुतिका भी तुम इस्तेमाल
करो सोच समझकर बहुत ।
जितनी जरुरी सिर्फ उतनीही
सामनेवाला ना हो आहत ।।

करनेसे पहले स्तुति
जानो सामनेवाले की औकात ।
जहाँ करनी वहाँ ही करो
यह लाख पते की बात ।।

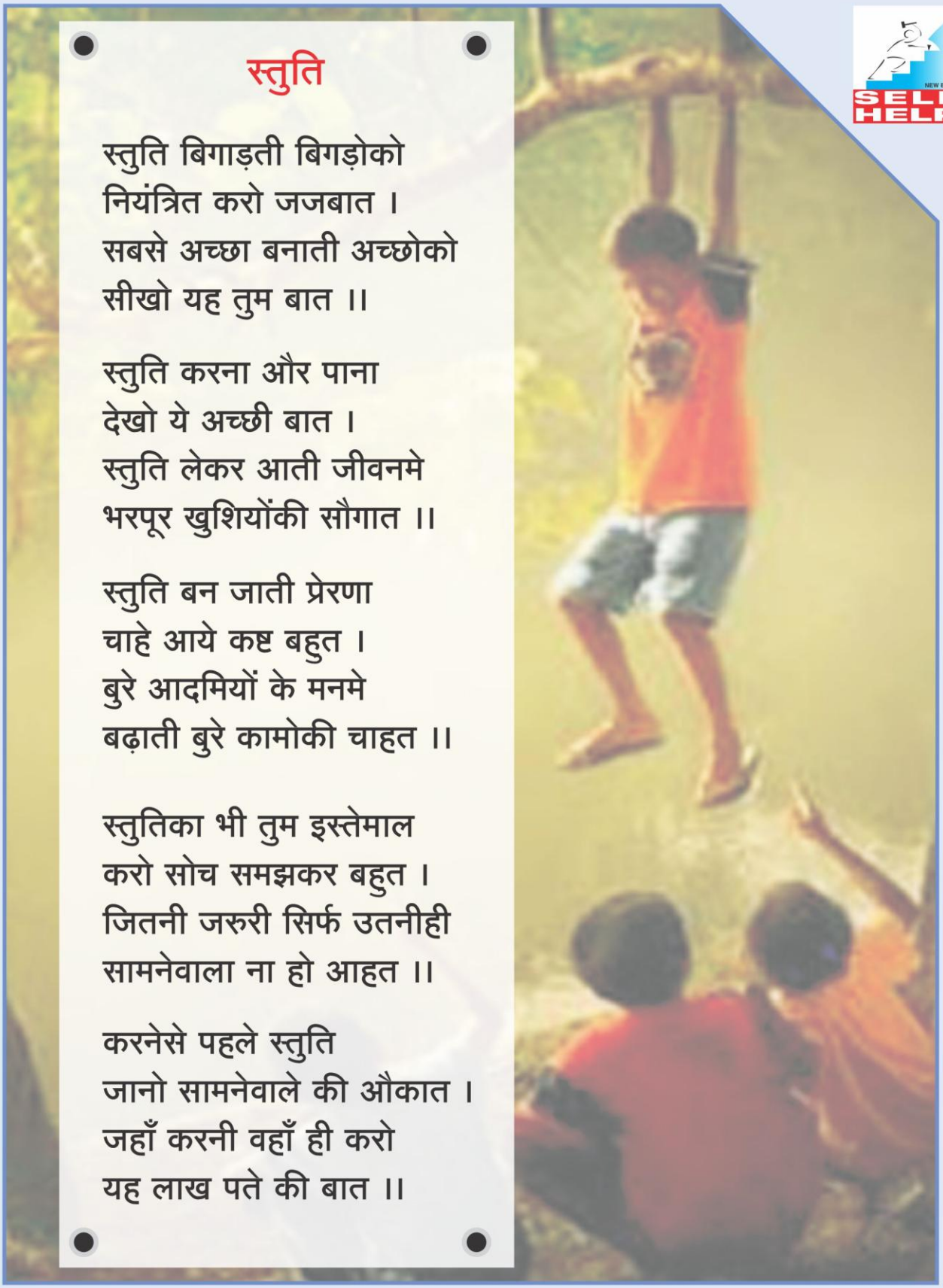

सृष्टि का आदर

सृष्टी का आदर करना
देखो बच्चो फर्ज हमारा ।
इसपर हि टिका हुआ
स्वस्थ और सुंदर जीवन तुम्हारा ।।

फल, फूल और औषधियाँ
देते हमको कितना सहारा ।
इनके बिना जीवन नही
समझो तुम इनका इशारा ।।

नदी नाले साफ रखो
गंदा ना हो कोई किनारा ।
इसपर निर्भर हरकोई आज
हटाओ यहाँसे कूड़ा कचरा ।।

पशु, पक्षी और पालतू जानवर
जीवन आसान करते हमारा ।
खेत खलीयानोमें मेहनत करते
बनते वो हमारा सहारा ।।

धरती, आसमान, चाँद, सूरज
इनसे रिश्ता पुराना हमारा ।
जो बच्चा सृष्टि का आदर करेगा
वह बन जायेगा सबका दुलारा ।।

आर्शीवाद

हरदम भरा रहना चाहिये
तुम्हारा आर्शीवाद का खजाना ।
बड़ो की सेवा किये बिना
मुश्किल है इसे पाना ।।

आर्शीवाद के जरीये सीखो
बिगड़ी बात बनाना ।
इसी के कारण संभव है
बड़े बड़े संकट भगाना ।।

आर्शीवाद याने दुवायें
दिल की गहराईयोंसे पाना ।
दवासे ज्यादा है दुवायें
यह तुम याद रखना ।।

गुरुजनोंकी, साधु संतोकी
तुम खूब सेवा करना ।
आर्शीवाद का हाथ उनका
सदैव अपने सरपे रखना ।।

सेवा और आर्शीवाद के साथ
जीवनमें पवित्रता लाना ।
सुख, शांती और आनंद
पक्का है तुम्हारे जीवनमें आना ।।

विचलित न हो

मन के विचलित होनेसे
बुद्धि स्थिर नही कर पाओगे ।
विषय को ना समझकर
काम करनेसे पीछे हट जाओगे ।।

छोटी छोटी बातो पर
सीखो विचलित ना होना ।
जो भी काम करना है
उसे बिना उकताये पूरा करना ।।

बार बार विचलित होने का
तुम इलाज करो ।
ध्यान और प्राणायम कर
बुद्धि और मन स्थिर धरो ।।

ध्रुव तारे जैसा आसमानमें
हिमालय जैसा स्थिर रहो ।
कितनीभी कोई कोशिश करे
अपने पथ पर बढ़ते रहो ।।

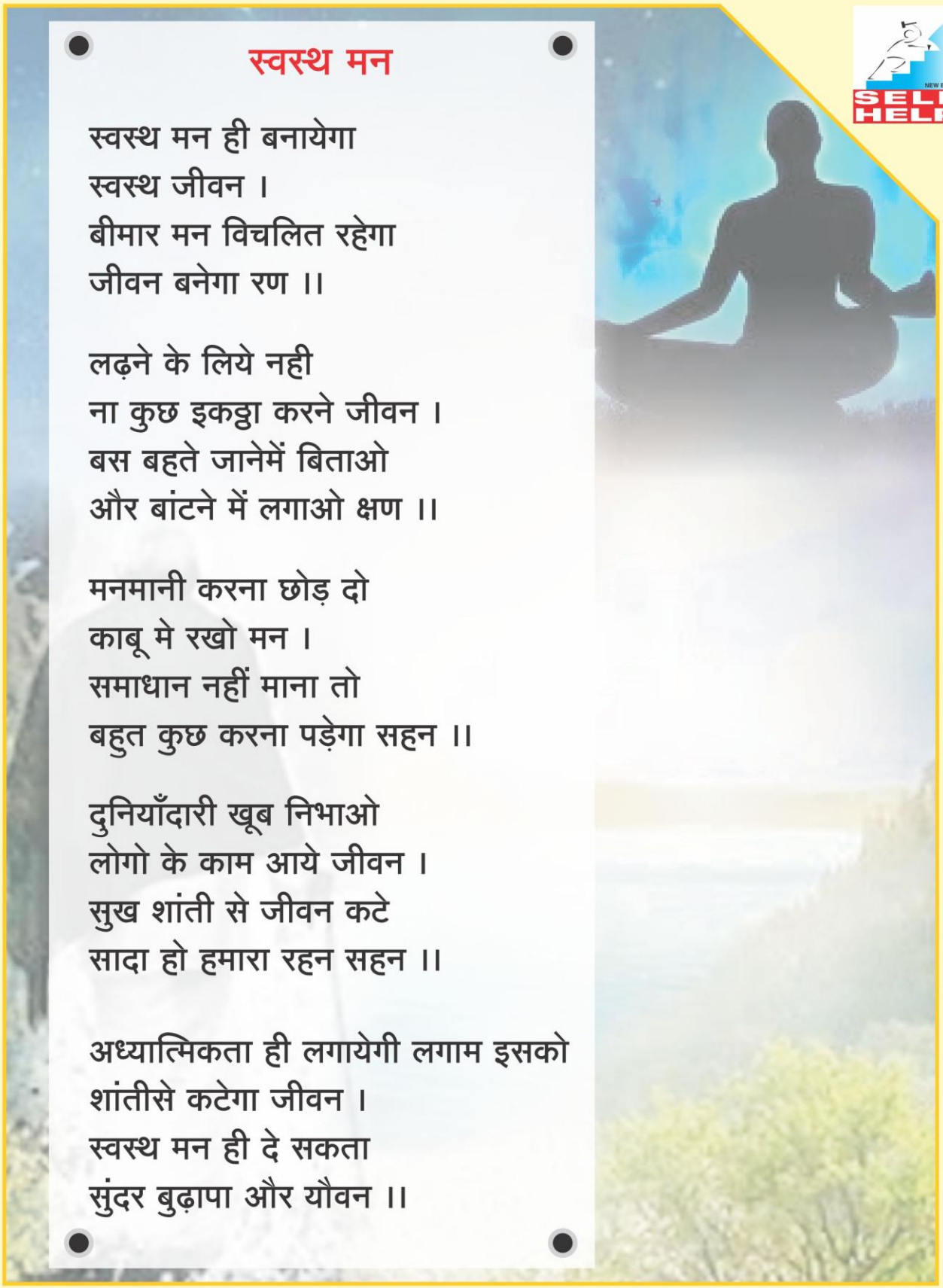

स्वस्थ मन

स्वस्थ मन ही बनायेगा
स्वस्थ जीवन ।
बीमार मन विचलित रहेगा
जीवन बनेगा रण ।।

लढ़ने के लिये नही
ना कुछ इकठ्ठा करने जीवन ।
बस बहते जानेमें बिताओ
और बांटने में लगाओ क्षण ।।

मनमानी करना छोड़ दो
काबू मे रखो मन ।
समाधान नहीं माना तो
बहुत कुछ करना पड़ेगा सहन ।।

दुनियाँदारी खूब निभाओ
लोगो के काम आये जीवन ।
सुख शांती से जीवन कटे
सादा हो हमारा रहन सहन ।।

अध्यात्मिकता ही लगायेगी लगाम इसको
शांतीसे कटेगा जीवन ।
स्वस्थ मन ही दे सकता
सुंदर बुढ़ापा और यौवन ।।

वर्तमान में जियो

भविष्य के बारेमें सोचते हुये
हमने कितने दिन गवायें ।
भविष्य उज्जवल ही होगा
गर हम वर्तमानमें जी पाये ।।

वर्तमानमे गर हम
बीज ना बो पाये ।
तो बताओ भविष्यमें हम
क्या फसल उगाये ।।

इसलिये आओ वर्तमानको ही
भविष्य की सीढ़ी बनाये ।
सशक्त वर्तमान बनानेसे ही
फूलेगी भविष्यमे अनेक आशाये ।।

जिंदगी अनमोल है बच्चो
क्यो हम अपना वर्तमान गवायें ।
आजपर ही कल टिका हुआ
आओ हम यह जान जाये ।।

भविष्य की चिंता छोड़ो
साधना मे हम समय लगाये ।
आज की मेहनत पूरी हुई
तो पूरी होगी भविष्यकी योजनाये ।।

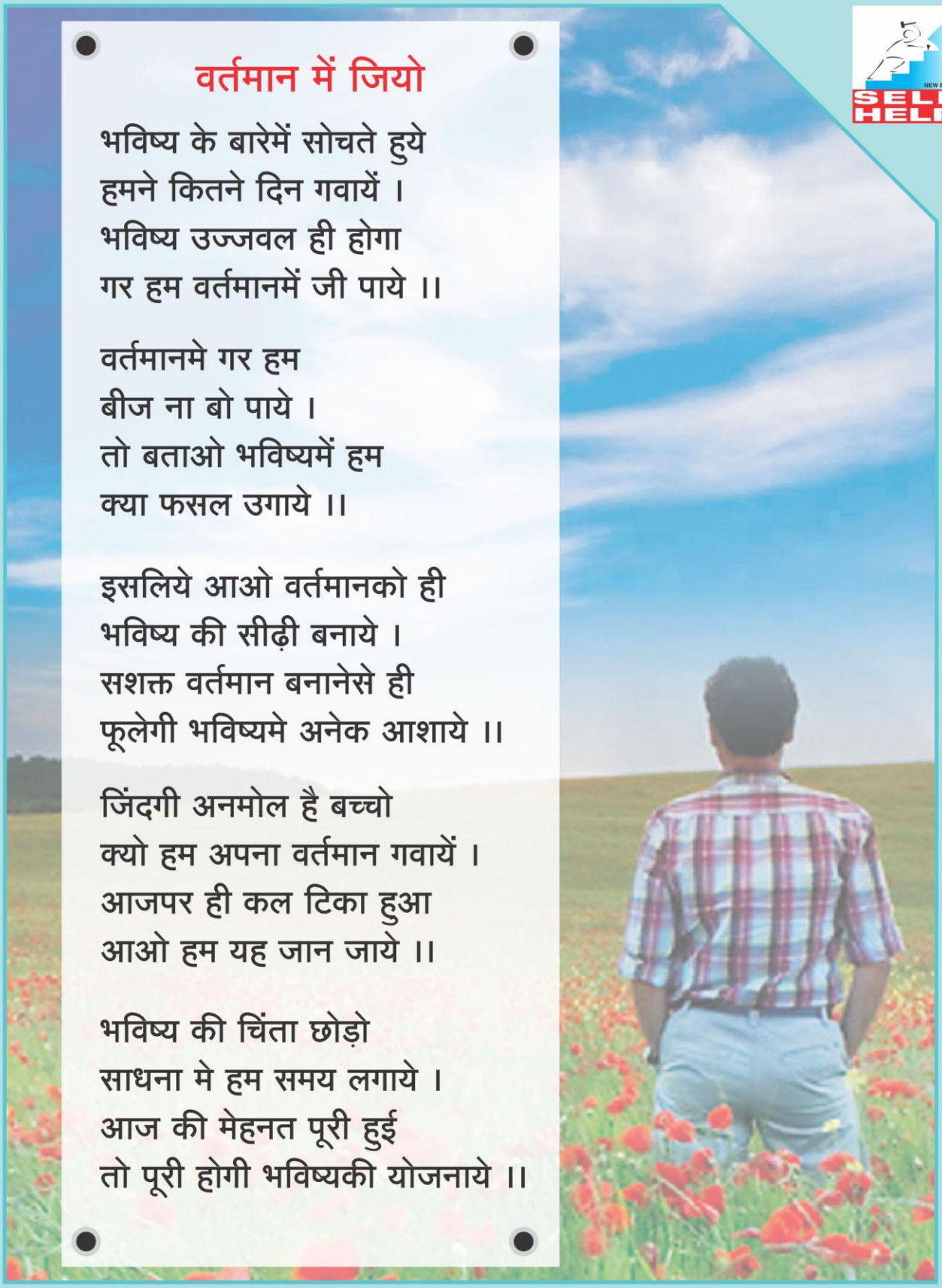

पढ़ाई

पढ़ाई आई ढ़ेर सारें
उपहार साथ लाई ।
मम्मी पापा खुश हुये
गुरुजनोंकी मेहनत रंग लाई ।।

बहुत सारी पढ़ाई
है एक अच्छाई ।
इससे अच्छे इंन्सान हुये
कईयोंने जीत इससे पाई ।।

पढ़ाई में होती थोड़ी कठिनाई
पर खुशियाँ इसने बहुत दिलाई ।
आत्मसन्मान हमारा बढ़ाकर
योग्यतायें हमारी उभर आई ।।

चाहे कितनी मुश्किलें आये
बच्चो करो ढ़ेर सारी पढ़ाई ।
थोड़े से परिश्रम के बदले
खुशियाँ हमपर कितनी बरसाई ।।

आलस छोड़ो मेहनत करो
करो तुम निराशा की बिदाई ।
पढ़ाई करके नापो तुम
आसमान की ऊँचाई ।।

भविष्य बनाओ

वर्तमान को साधना मे लगाकर
बच्चो अपना हौसला बढ़ाओ ।
ध्येय अपना निश्चित कर
जो चाहो तुम बन जाओ ।।

तकलीफों को ललकार कर
तुम अपनी ताकत आजमाओ ।
जीतेजंगे जीवन की
सुनहरे भविष्य को गले लगाओ ।।

कार्य का परिणाम क्या होगा
पहले यह पता लगाओ ।
विषय की जानकारी इकट्ठा कर
उसमे तन,मन,धन लगाओ ।।

लगातार पढ़ाईसे तुम भविष्यके
बारेमें पता लगा पाओ ।
सुनहरे भविष्यको पाकर
सारी तकलीफें भूल जाओ ।।

भूतकाल को साथ लेकर
वर्तमान को तुम आजमाओ ।
ताकत और हिम्मतसे अपने
सुनहरे भविष्य को खींच लाओ ।।

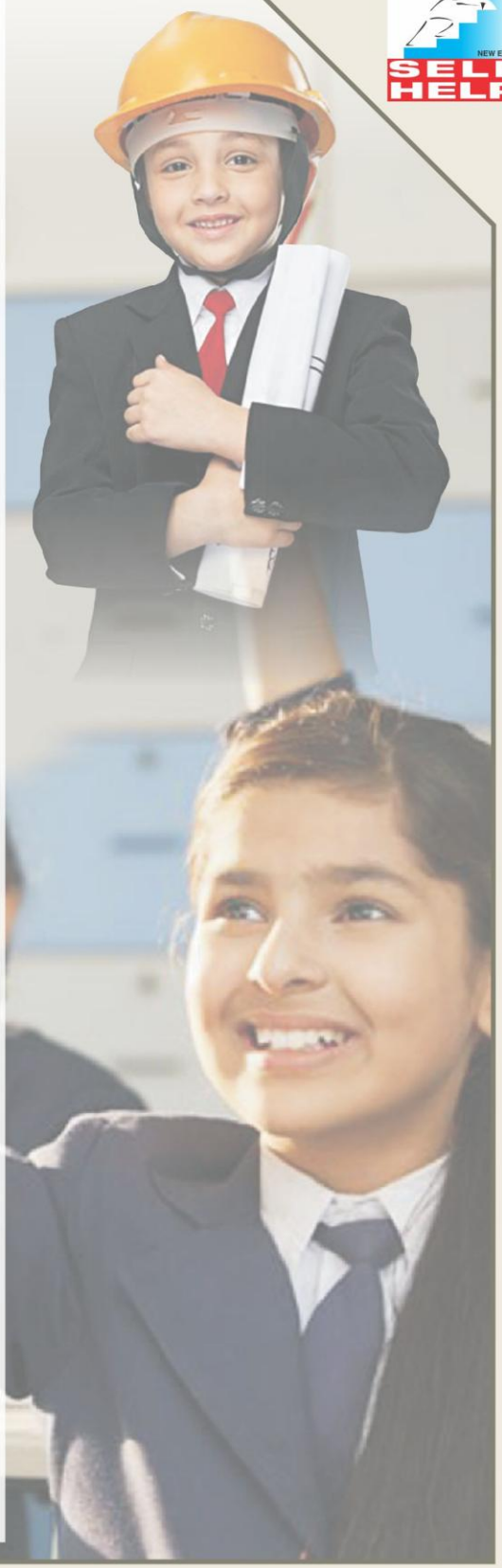

दोस्ती

दोस्ती है
बहुत कीमती ।
हर किसी को यहाँ
ये नही मिलती ।।

चाहे जो तुम्हे अच्छाई
बुराईयों के साथ ।
संकटो और तकलीफोंमें भी
जो रहे साथ ।।

जो लंबे समय तक साथ
रहने की करे बात ।
तुम पकड़े रहो
वह दोस्ती का हाथ ।।

अच्छे व्यवहार को दोस्ती
समझना है गलत बात ।
दोस्ती नही सुविधा
जानो यह अंदर की बात ।।

बुरे लोगो के तरफ
ना बढ़ाओ दोस्ती का हाथ ।
अच्छे लोगो की दोस्ती
करती खुशियोंकी बरसात ।।

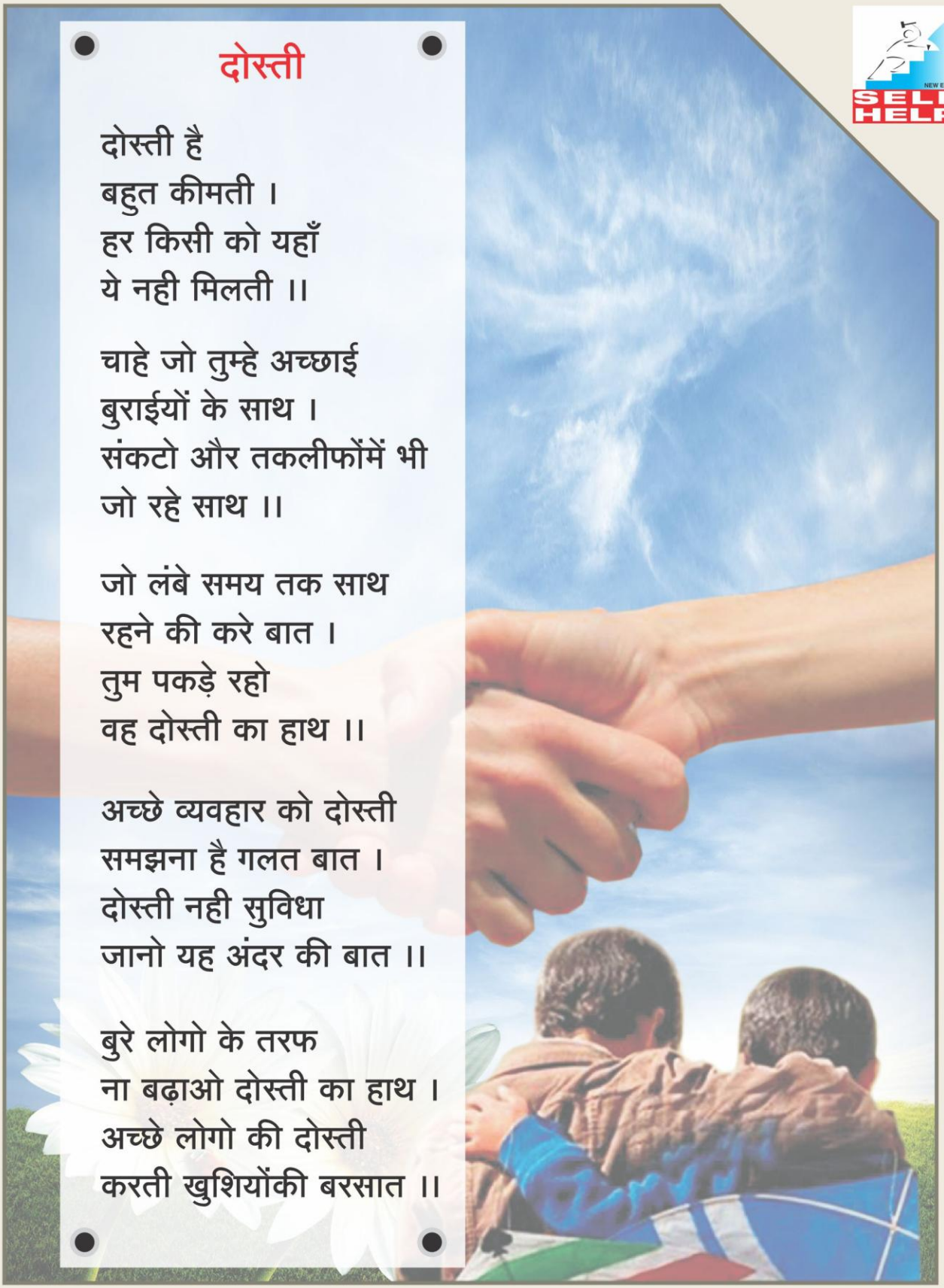

अच्छी आदतें

अच्छी आदतें है पंख तुम्हारे
उड़ सकते हो इनके सहारे ।
यह देती हौसला उड़नेका
निड़रतासे मिलते दूरके किनारे ।।

स्वस्थ तन और मन बनते
सिर्फ अच्छे आदतो के सहारे ।
आत्मबल बढ़ाकर कुछ
हासिल करने दिल पुकारे ।।

अच्छी आदतें सीखते तुम
माँ,बाप गुरुजनोके सहारे ।
करो खूब सेवा जरुरतमंदोकी
दुआ देंगे तुमको दीन दुखियारे ।।

आदतें ही आदमी की
बिगड़ी किस्मत सवारे ।
पाने अच्छी आदत मोटी
कीमत चुकानी पड़ती प्यारे ।।

अच्छी आदतोंके कारण
बन जाओगे सबके दुलारे ।
वरना मंझिल के पास लाकर
डुबो देगीं तुम्हे लहरे ।।

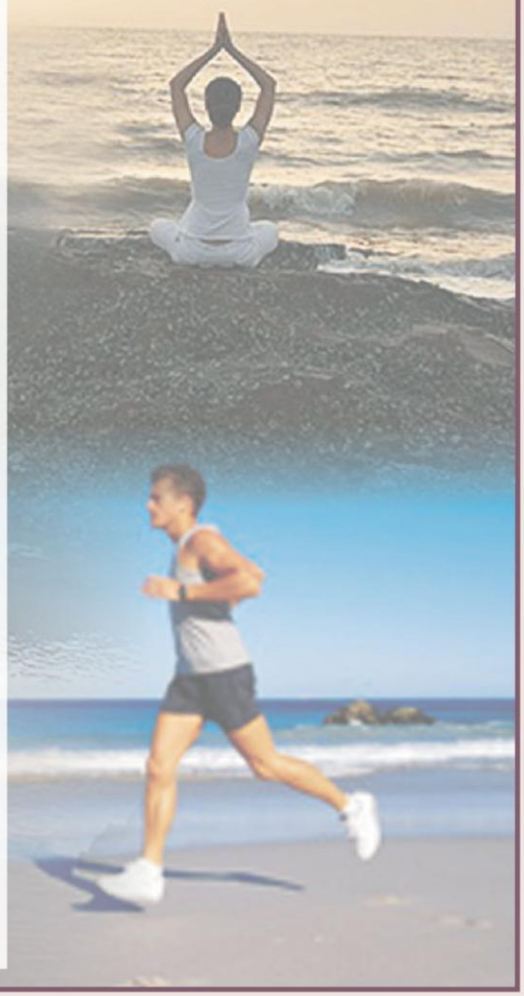

भाषा

जितनी हो सके
सीखो तुम भाषायें ।
जग में देखो
है कितनी विविधतायें ।।

हर जाती धर्म में
है बहुत सारी विशेषतायें ।
भाषाओका ज्ञान रखकर
हम इन्हे पाना चाहे ।।

विविधताओंसे लदी
भारत की हर दिशायें ।
चार पाँच मीलपर बदलती
यहाँपर अलग अलग भाषायें ।।

देखो इस वसुंधरा पर
हर कोई अपनी बात बताये ।
पेड़ पौधों, पशु पक्षिओंकी भी
होती अपनी बोली भाषायें ।।

भाषा कोई भी सीखो पर
टिकी रहे मातृभाषा पर निगाहें ।
भाषाओंकी पढ़ाई कर
हम समझे और समझायें ।।

जड़ता

दिमाग हमारा बार बार
जड़ता को अपनायें ।
इसीलिये तो हमे नई
चीज करनेमें आलस आये ।।

दिमाग हमारा नहीं चाहता
हम बार बार विषय बदलायें ।
एक ही काम करें हम
कोई काममें बदल न लायें ।।

बदलाव ही जीवन की
स्थिर चीज हम समझ जाये ।
फिर क्यों हमारे दिल में
नये काम करनेकी चिड़ आये ।।

समय के अनुसार बदलनेसे
हम वक्त के साथ चल पायें ।
ऐसा करने से हम
'अप टू ड़ेट' कहलायें ।।

बच्चों तुम जड़तासे
बाहर आना सीख जाये ।
जड़ता यह खेल अनोखा
अपनी खुली आँखोसे देख पाये ।।

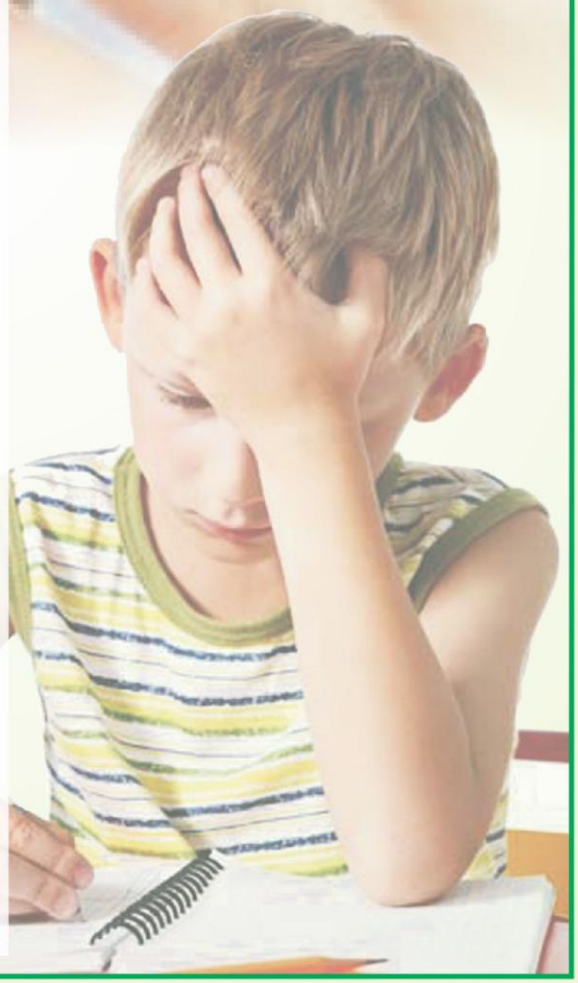

नसीब

जो मिला उसको नसीब
समझकर ना होना समाधानी ।
जो चाहिये उसे पाकर
निश्चित करो दिशा अपनी ।।

नसीब कहकर ध्येय से हटना
खुदसे करना है बेईमानी ।
परिश्रम से लक्ष्य हासिल करते
होते जो बच्चे स्वाभिमानी ।।

नसीबको कर्मोसे उलझाना
है यह गलती पुरानी ।
छोड़ो बच्चो यह सब बाते
भरो भुजाओमे ताकत दुगनी ।।

नसीब के सहारे बैठकर
नही होगी यह दुनियाँ अपनी ।
बचपन तो खोही जायेगा
बरबाद होगी तुम्हारी जवानी ।।

कर्मोसे लगन को बाधेंगे हम
वक्त का देंगे खूब पानी ।
खुद विजयी हो प्रोत्साहित करेंगे
लिखेंगे एक नई कहानी ।।

रोगो से बचो

रोगो के बाद दवा खानेसे
अच्छा है रोगो से बचना ।
कैसे बचा जा सकता इनसे
यह तुम हरदम सोचना ।।

गंदे पानी, हवा, खानेके चीजोंसे
मुश्किल होता रोगोसे बचना ।
शुद्ध पानी, हवा और भोजनसे
आसान होगा रोगोसे लढ़ना ।।

रोगो से वक्त, पैसा, शक्ती जाती
दु:ख भी पड़ता है झेलना ।
पढ़ाई करना मुश्किल होगा
नहीं मिलेगा खेलना ।।

सर्दी खाँसी छीकंते वक्त
देखो तुम रुमाल इस्तमोल करना ।
नही तो खुद भी पछताओगे और
और को भी पड़ेगा पछताना ।।

रोग प्रतिरोधक शक्ती बढ़ाओ
गहरे रंगोवाले फल तुम खाना ।
रोज खेलो वर्जिश करो
रोगो को पड़ेगा भाग जाना ।।

भूतकाल से सीखो

स्वानुभव से सीखना चाहोगे तो
अधूरा जीवन गुजर जायेगा ।
दूसरोके अनुभव, विचार, प्रयोग
कब हमारे काम आयेगा? ।।

लोगोंकी जीवनियाँ, संशोधन
बच्चों तुम जरुर पढ़ो ।
इस युग से उन्हे जोड़
भविष्यकी सीढ़ियाँ चढ़ो ।।

भूतकाल बैठा हमे सिखाने
ढ़ेर सारी किताबे पढ़ो ।
हम भूतकालसे सीखकर
सुदृढ़ भविष्यकी और आगे बढ़ो ।।

हम भूतकाल की परछाईयोको
अपनेसे जुदा न कर पायेगें ।
ऐसा करनेसे अपने गुरुओका
ज्ञान हम व्यर्थ गवायेंगें ।।

भूतकाल को गर जड़े समझे
वर्तमान बुंधा कहलायेगा ।
भविष्य देखो फिर हरी भरी
ड़ालियाँ फल, फूल बन जायेगा ।।

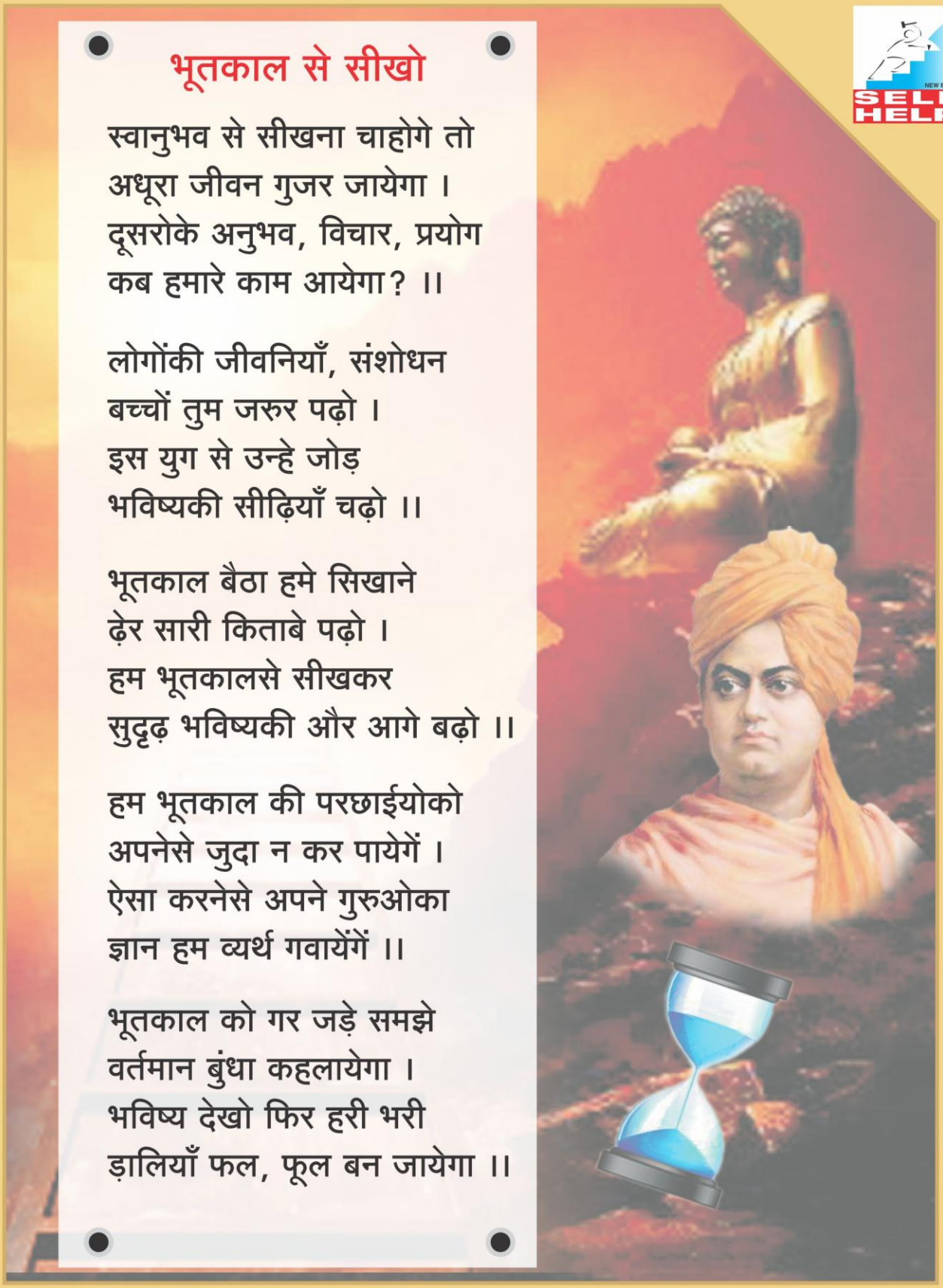

मनोरंजन

मन को जो बाते अच्छी लगती
उन्हे करने को मनोरंजन कहते ।
जो बच्चे पढ़ाई के बाद
इसे करते वह कुछ बन पाते ।।

मनोरंजन अच्छा लगता इसीलिये
सारा समय तुम इसमे ना लगाओ ।
इससे भी ज्यादा जरुरी चीजोंके
तरफ ध्यान अपना बटाओ ।।

यह चित्त प्रफुल्लित करता
मनोरंजन के लिये वक्त बचाओ ।
मगर सिर्फ मनोरंजनमें लगकर
ना अपने कर्तव्योंसे भटक जाओ ।।

अच्छे और बुरे मनोरंजन होते है
पहले इसे समझ जाओ ।
खेल भी मनोरंजन है बच्चो
उससे अपना शरीर बनाओ ।।

बुरे मनोरंजन से खुद भी बचो
औरोको भी इससे बचाओ ।
मधुर संगीत, अच्छी कहानियाँ
इनको अपना मनोरंजन बनाओ ।।

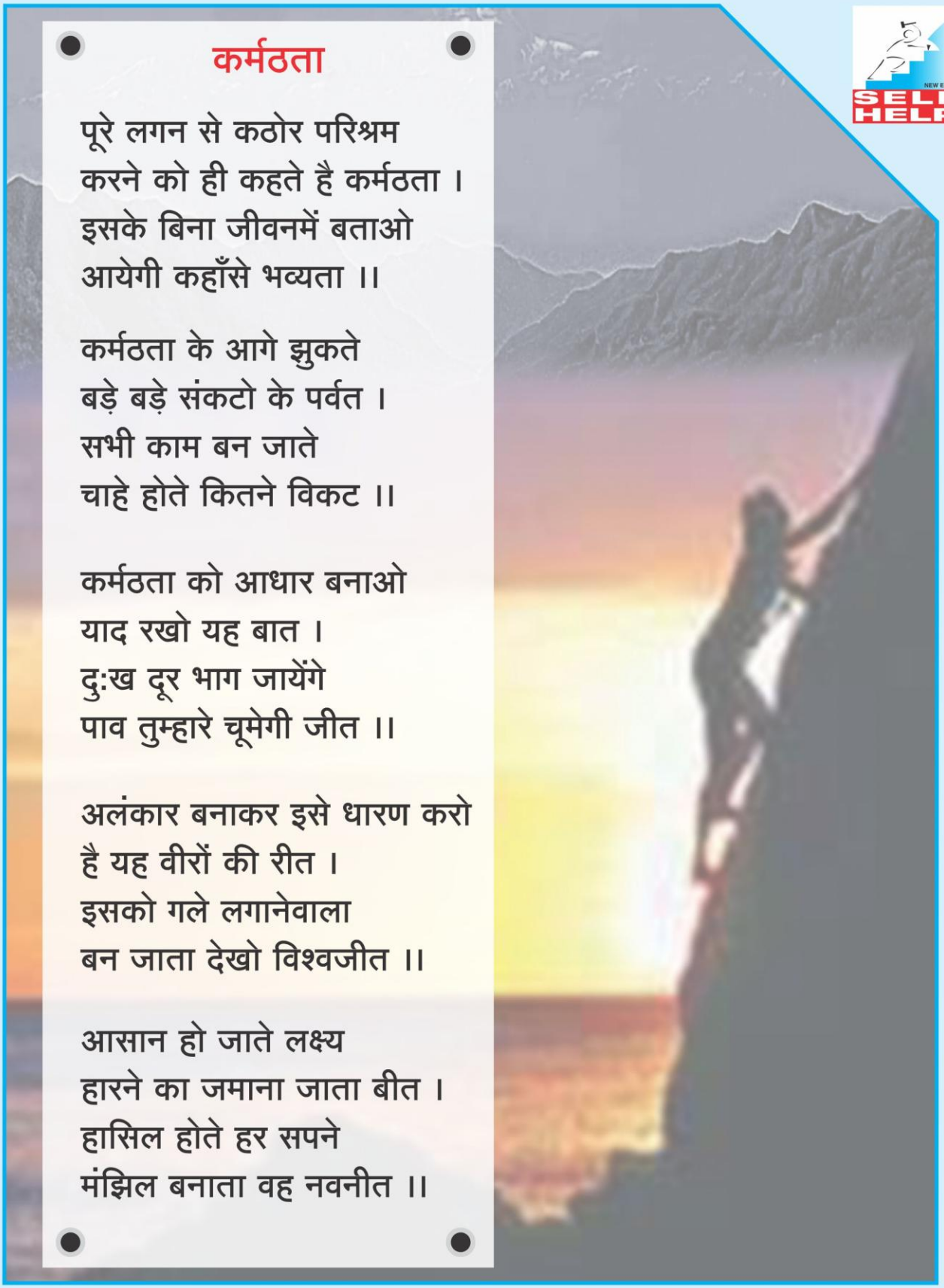

कर्मठता

पूरे लगन से कठोर परिश्रम
करने को ही कहते है कर्मठता ।
इसके बिना जीवनमें बताओ
आयेगी कहाँसे भव्यता ।।

कर्मठता के आगे झुकते
बड़े बड़े संकटो के पर्वत ।
सभी काम बन जाते
चाहे होते कितने विकट ।।

कर्मठता को आधार बनाओ
याद रखो यह बात ।
दु:ख दूर भाग जायेंगे
पाव तुम्हारे चूमेगी जीत ।।

अलंकार बनाकर इसे धारण करो
है यह वीरों की रीत ।
इसको गले लगानेवाला
बन जाता देखो विश्वजीत ।।

आसान हो जाते लक्ष्य
हारने का जमाना जाता बीत ।
हासिल होते हर सपने
मंझिल बनाता वह नवनीत ।।

यह कार्य नही क्रांती है।

सकारात्मक सोच

कैसे रहेगा भविष्य?
निर्भर तुम्हारे सोच पर ।
गलत सोच से भटकोगे
सही सोच पहुँचायेगी मंझिलपर ।।

सोचको समझो बच्चो
जैसे नदियाँका उस पार ।
सही सोचसे पहुँचोगे
वरना डूब जाओगे बीच मझधार ।।

सही सोच के पंख लगाकर
दुनियाँ पहुँची चाँदपर ।
गलत सोच वालोने पहुँचाया
कईयोंको विंध्वस के द्वारपर ।।

हँसकर या रोकर जीना
निर्भर तुम्हारे सोच पर ।
अच्छे सोचने वाला व्यक्ती
जाता कईयोंको प्रेरित कर ।।

करो बच्चो कोईभी काम
तुम बहुत सोचकर ।
छोड़ जाना पड़ेगा वरना
हमको ये जहाँ पछताकर ।।

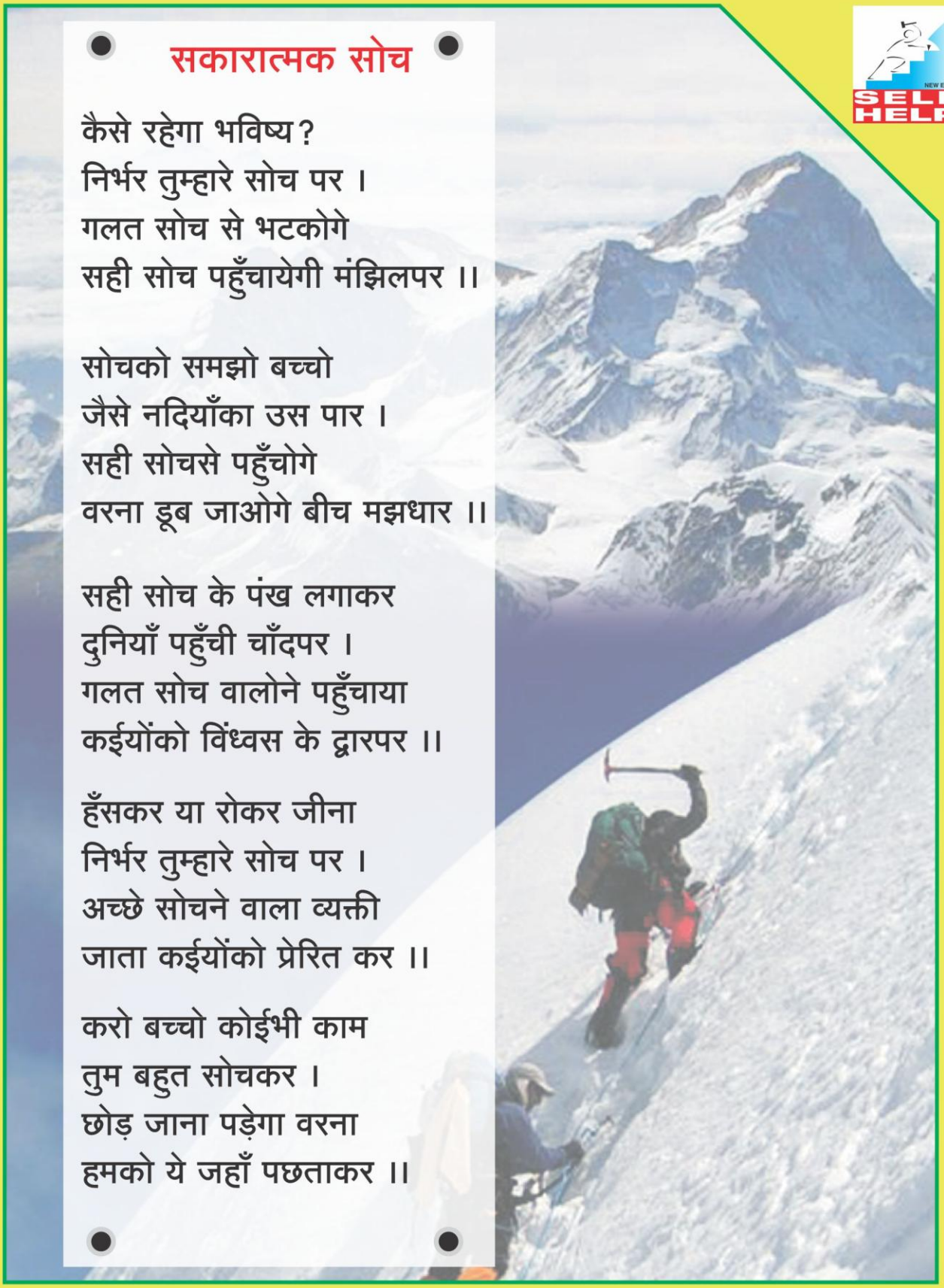

अपाहिजो के प्रति व्यवहार

अपाहिजो के प्रति
हमारा ऐसा व्यवहार हो ।
वे अपाहिज है ऐसा
उन्हे ना आभास हो ।।

भले ही सृष्टिने हमसे
उन्हे कुछ कम दिया हो ।
मदत जरुर करो जहाँ
उन्हे हमारी जरुरत हो ।।

देखो वो कभी
दया के पात्र ना हो ।
हरदम उनको अपने
स्वाभिमान का एहसास हो ।।

ऐसा कुछ करो जिससे
आसान उनका जीवन हो ।
हरदम दिलमे उनके लिये
प्यार और हमदर्दी हो ।।

अपाहिज आज वो है
कल हम भी हो ।
उन्हे दु:ख हो ऐसा
ना कुछ तुम कहो ।।

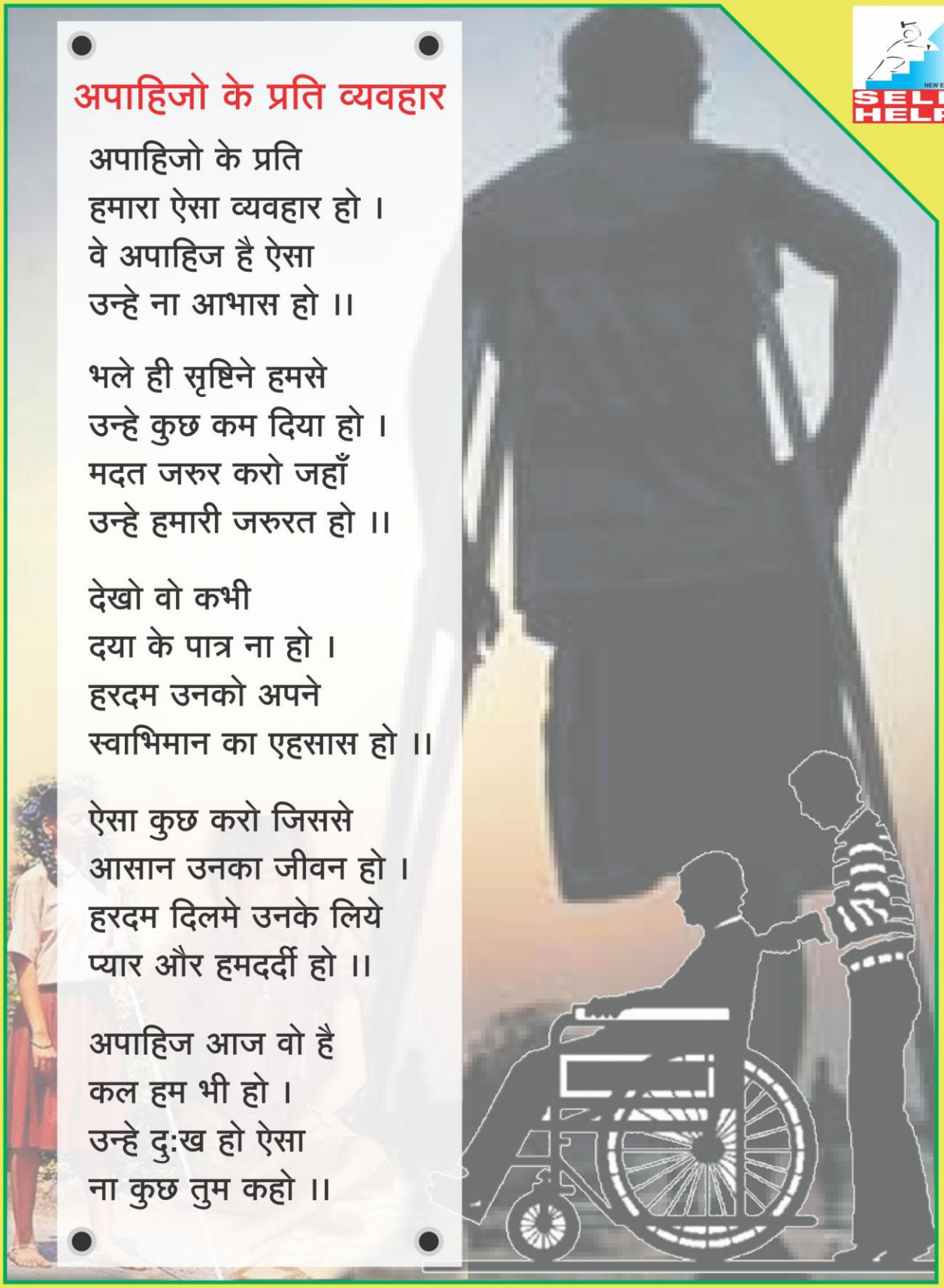

हमारे मराठी एवं हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को प्रोत्साहीत करने प्रेरणात्मक
सुविचार, शेरो शायरी, दोहे

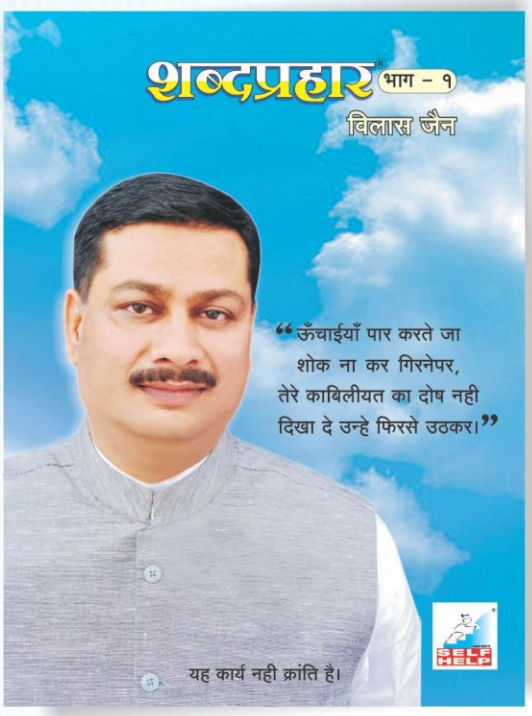

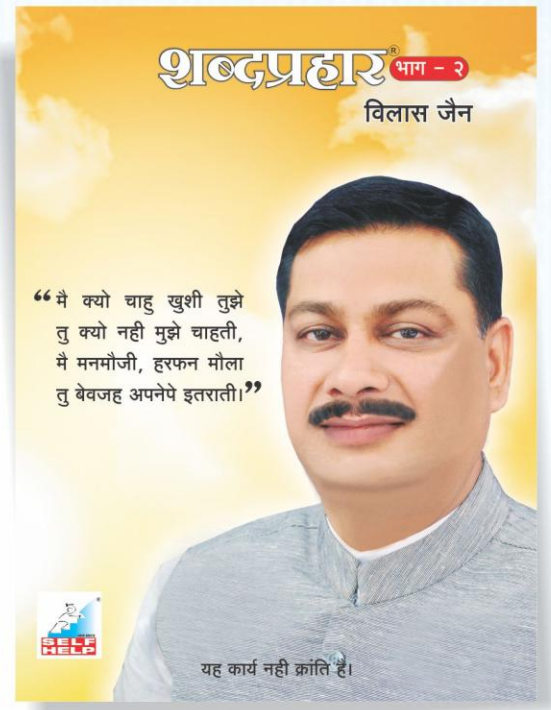

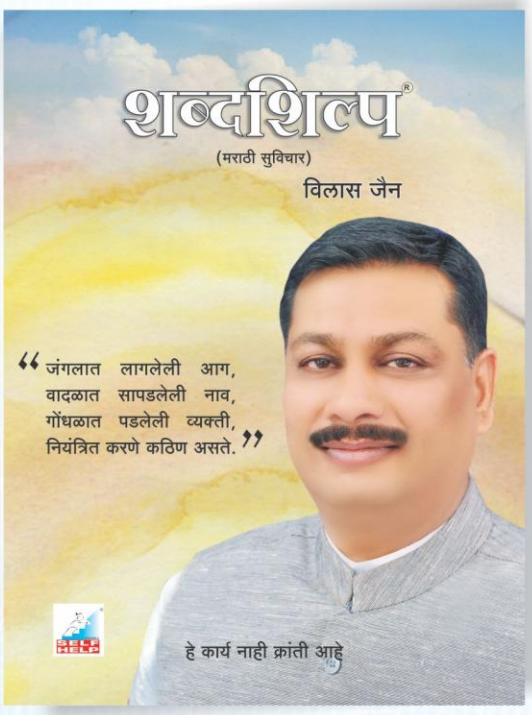

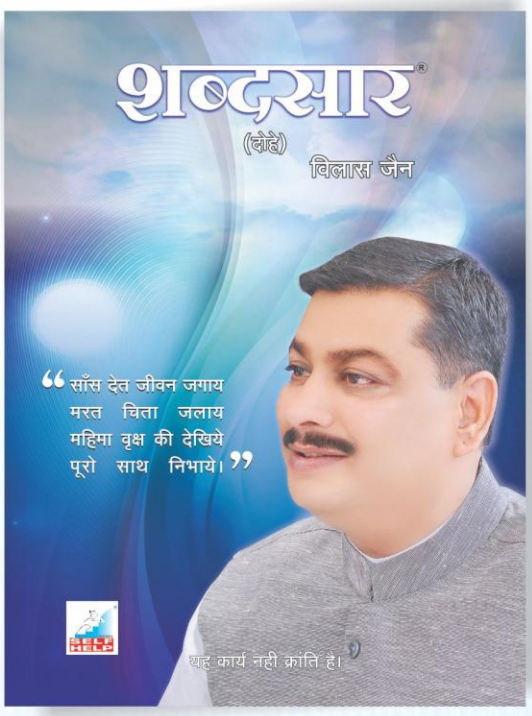

यह कार्य नही क्रांती है।

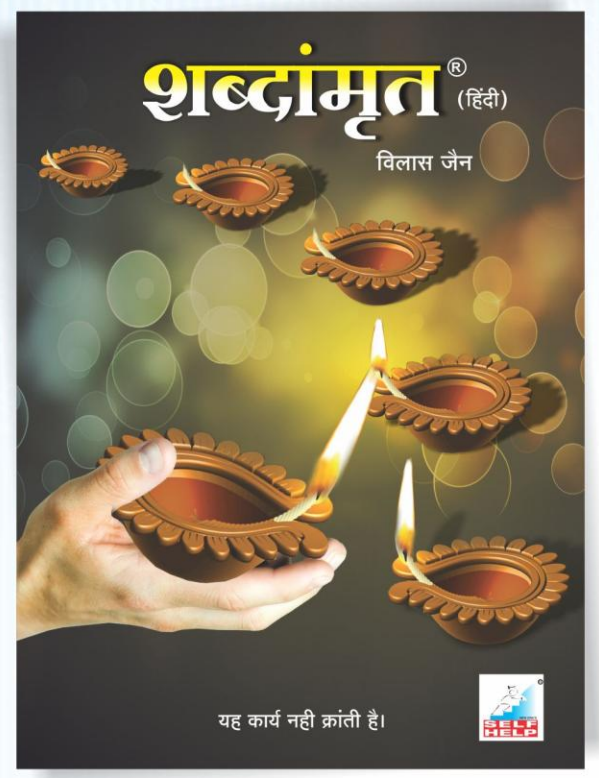

शब्दांमृत®(हिंदी)
जीवन कि तरफ देखने का
नजरीयाँ देने वाली कविता संग्रह

शब्दांमृत®(मराठी)
मराठी भाषी समाजपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को
प्रोत्साहीत करने के लिए
३९ कविताओं का संग्रह

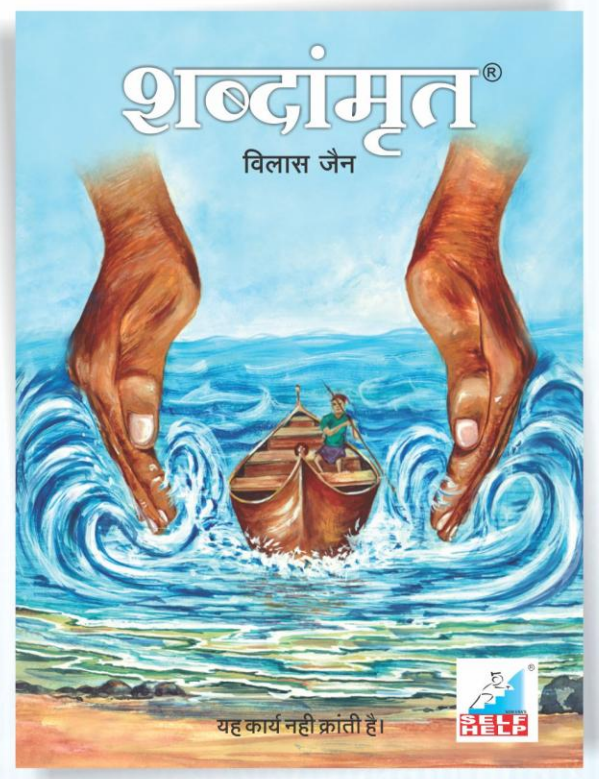

यह कार्य नही क्रांती है।

हमारे हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य बच्चोंके मनपर संस्कार ड़ालनेके लिए २५ कविताओं के संग्रह **नव निर्माण**®के चार भाग

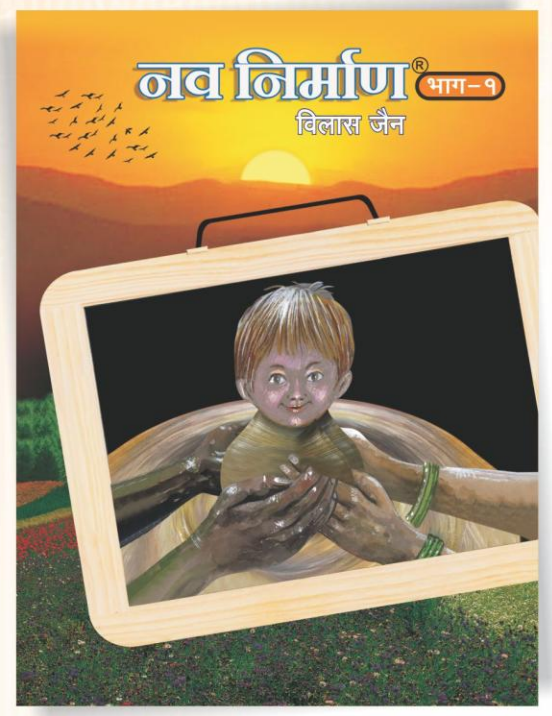

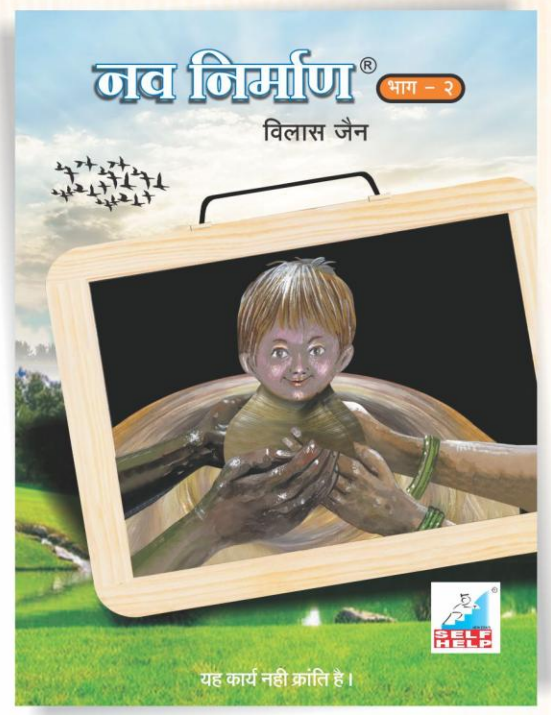

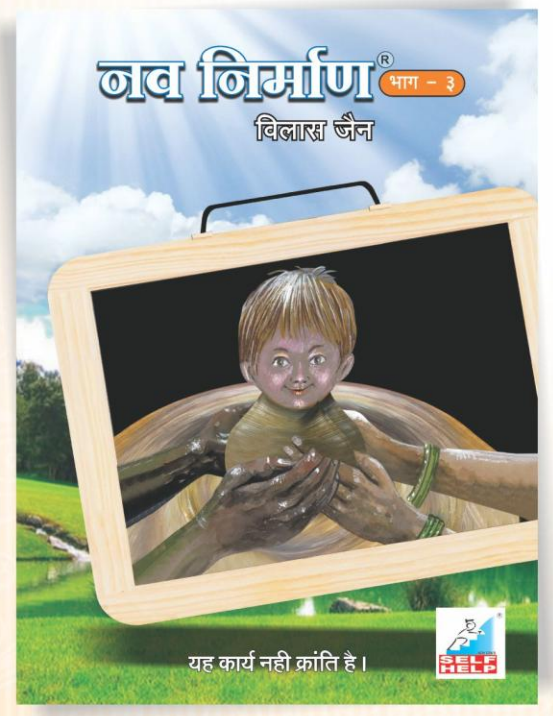

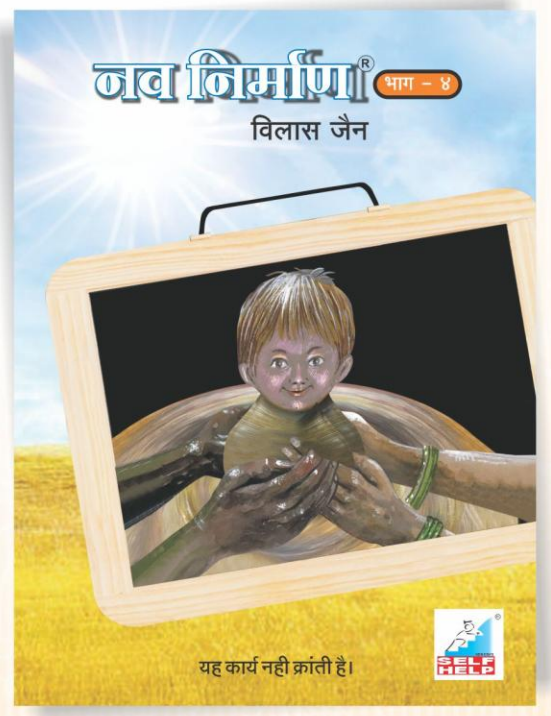

यह कार्य नही क्रांती है।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे है ।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर है ।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते है ।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते है ।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते है ।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते है ।

धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

विशेष आभार :

मेरी धर्मपत्नी सौ. संगीता जैन, एम.ए.(इको.) इनके
जिन्होंने मेरे सभी हिंदी भाषिक किताबो का शुद्धलेखन किया।

यह कार्य नही क्रांती है।

मेरा परिचय

पल पल में
बदलते जीवन का
क्या दूं मै
अपना परिचय।
पाने से ज्यादा
लौटा सकूं
यह मेरा है
दृढ़ निश्चय।
शिक्षा, उपाधि, अनुभव
का नही मोहताज
किसी का
अच्छा मनोदय।
लुप्त हो कुप्रथा
और बुरी आदतें
सुंदर, सुदृढ़,
समाज का
हो उदय।
अथक प्रयास
और ध्येय से
रचा कितना सुंदर
देखो मेरा परिणय।
कविताओं से निकले
अर्थ के सिवा
नहीं मेरा कोई
दूसरा परिचय।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

किमत □ १००/-

यह कार्य नही क्रांती है।